डा. बिनोद कुमार द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर
वाणिज्य संकाय
एसपीडी कॉलेज, गढ़वा

भारत में ग्रामीण विकास

भारत गांवो का देश है। इसीलिए भारत के गांवो की दशा का अध्ययन कर इनमें व्याप्त समस्यायों के समाधान का प्रयास ही ग्रमीण विकास कहलाता है। अर्थात ग्रामीण विकास उस क्रान्ति को कहते हैं जो ग्रामीण ढाचे को नया रुप प्रदान करे।

ग्रामीण विकास की आवश्यकता एवं महत्व

प्रत्येक राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय परंपराओं एवं विश्वासों के आधार पर भविष्य का रुप निर्धारित करता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत के भविष्य का निर्माण करने के लिए ग्रामीण विकास संबंधी योजना का प्रतिवेदन किया था। इसीलिए गांधीवादी प्रयोगों पर आधारित ग्राम विकास आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्वतंत्रताओं पर आधारित है। इसमें वर्ग संर्घष, जातिय विरोध, शिक्षा, शक्ति और संपत्ति के क्षेत्र में प्रगतिशिल निर्णय लिये जाने का प्रावधान है। भारत प्राथमिक रुप से एक ग्रामीण देश है और इसकी समृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों की समृद्धि पर निर्भर है। इस प्रकार स्वतंत्र भारत की यह प्रथम विचारधारा है जो ग्रामीण समुदाय के विकास पर केन्द्रीत है। हम सभी जानते हैं कि भारत की 80 फीसदी जनसंख्या ग्रामीण है। जबकि कनाडा में 46 प्रतिशत, उत्तरी आयरलैण्ड में 59 प्रतिशत और फान्स की 51 प्रतिशत जनसंख्या ही ग्रामीण है। इस तरह अन्य देशो की तुलना में ग्रामीण विकास की आवश्यकता इस देश के लिए राष्ट्रीय समृद्धि में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ग्रमीण विकास एक बहुदेश्शीय योजना है जिसके अर्न्तगत आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षणिक, स्वास्थ्य संबंधी आदि सभी समस्यायों को संगठित एवं संस्थात्मक तरीके से ग्रामीण विकास के अर्न्तगत ही दुर किया जा सकता है। ग्रामीण विकास उन सुविधाओं, प्रयोगों तथा प्रयत्नों का जाल है जो अपेक्षित परिणाम प्राप्त कर सकता है। ग्रामीण विकास का लक्ष्य ग्रामीण समाज का भौतिक, मानसिक, अध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक विकास है। इस आन्दोलन के द्वारा न केवल ग्रामीण व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है बल्कि उसमें आत्मसंतुष्टि, आत्मविश्वास तथा आत्म अभिमान के गुण भी विकसित करना है।

Scanned by CamScanner

भारत में ग्राम विकास का इतिहास

भारत में ग्राम विकास के लिए प्रत्येक युग में प्रयास होता आया है। ग्राम विकास के आन्दोलन में सदैव आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों की छाप रही है। पुरातण काल में गौतम बुद्ध, चन्द्रगुप्त आदि इस क्षेत्र में महान दार्शनिक हो गये हैं। जिन्होंने अपने काल में ग्राम विकास की भावनाएं प्रस्तुत की हैं। मुगल काल से लेकर इतिहास के हर काल में ग्रामीण विकास की ओर प्रत्येक सम्राट और राजा का ध्यान गया है। और इस दिशा में प्रयास हुए हैं। आधुनिक युग में तो ग्रामीण कल्याण भावनाओं में विशेष प्रगति लक्षित होती है। इस प्रकार भारतीय ग्रामों की समस्त समस्यायों का निवारण करने के लिए प्रारंभ से ही प्रयत्न होते आए हैं। देश की आजादी से पूर्व और आजादी के बाद राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का ध्यान इस दिशा में सबसे पहले केन्द्रीत हुआ था। ग्रामीण विकास की आकांक्षा उनके प्रत्येक प्रयास मे लक्षित होती है।

ग्रामीण विकास में बाधाएं

आजादी के बाद भी हमारे गांव आज भी बहुत अधिक विकसित नही हो पाए हैं। इसका मूल कारण यह है कि ग्रामीण समाज आज भी निराशावादी दृष्टिकोण रखता है। अशिक्षित होने के कारण ग्रामीण जनता योजनाओं को समझ नही पाती है और परिणाम स्वरूप उनसे लाभ नही उठा पाती। ग्रामीण विकास के कार्य में एक सबसे बड़ी बाधा यह भी है कि हमारे गांव में पूर्ण रूपेण जन जागृति नही हो पायी है। कुछ योजनाएं तो केवल सरकारी बनकर रह गयी हैं। जनता की योजनाएं नही बन पायी हैं।

ग्राम विकास के उद्देश्य

भारत के भविष्यवक्ता एवं महान दार्शनिक महात्मा गांधी ने ग्रामीण विकास के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि अहिंसक समाज में कोई किसी का शत्रु नही होगा, सब अपना–अपना काम करेंगे, कोई निरक्षर नही रहेगा, उत्तरोत्तर सबके ज्ञान की वृद्धि होती जाएगी। सारी प्रजा में कम से कम बीमारियां कम होंगी। कोई दरिद्र नही होगा और परिश्रम करने वालों को बराबर काम मिलता रहेगा। ग्रामीण विकास के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं :–

1. ग्रामीण निर्धनता को दुर कर जीवन स्तर को उन्नत बनाना
2. ऋण के दोषों को दुर कर ग्रामीण जनता की आर्थिक उन्नति को उन्नत बनाना
3. कृषि के साधनो व विधियों में आमुलचुल परिवर्तन करना

Scanned by CamScanner

4. कुटीर उद्योगों का पुर्नत्थान कर आत्मनिर्भरता की शक्ति प्रदान करना
5. श्रमदान की भावना जागृत कर स्वयं सेवा के भाव पैदा करना
6. सामुहिक जीवन व्यतीत करने का प्रशिक्षण देकर संगठन की भावना में वृद्धि करना
7. शिक्षा एवं संस्कृति का प्रसार करना
8. जन स्वास्थ्य एवं ग्राम्य स्वच्छता का ज्ञान कराना
9. लोकतांत्रिय भावना उत्पन्न कर स्थानीय शासन की स्थापना करना
10. मनोरंजन एवं सहकारी संस्थाओं की स्थापना करना
11. भूमि व संपत्ति का समान वितरण कर वर्गभेद का निवारण करना
12. जाति–पाति एवं छुआछुत को दुर करना
13. ग्रामीण जीवन को समृद्धशाली बनाना
14. निवास व्यवस्था में यातायात के साधनों की उन्नति करना
15. जन सहयोग द्वारा ग्रामों में आर्थिक उन्नति के कार्यक्रमों को सफलता पूर्वक क्रियान्वित करना

ग्राम् विकास के उपर्युक्त उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए कहा जा सकता है कि ग्रामीण विकास का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि ग्रामीण संरचना का पूर्ण परिवर्तन, नवस्थापन आदि सदैव से इसके लक्ष्य रहे हैं।

ग्रामीण विकास के क्षेत्र में आने वाले समस्याएं

1. ग्रामीण जनता का निराशावादी दृष्टिकोण
2. गंदगी का साम्राज्य
3. चिकित्सा एवं कुशल दाइयों का अभाव
4. शिक्षा एवं प्रशिक्षण की कमी
5. मनोरंजन एवं साधनों की अव्यवस्था
6. कृषि एवं पशुपालन के दोष
7. बीज एवं सिंचाई के उन्नत साधनों की कमीं

Scanned by CamScanner

8. पशुओं की बीमारियां
9. मुकद्नेबाजी एवं ग्रामीण ऋण व्यवस्था
10. सामाजिक रीति रिवाजों का साम्राज्य
11. पंचायतों का पुर्नगठन
12. बेरोजगारी एवं निर्धनता

तेजी से निरन्तर बदल रही परिस्थियों को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों, सामाजिक एवं राजनैतिक संगठनों आदि का ध्यान अब ग्रामीण विकास पर केन्द्रीत हो गया है। विभिन्न योजनाओं द्वारा ग्रामीण विकास की अवधारणा को साकार रुप देने का प्रयत्न किया जा रहा है।

ग्रामीण विकास के कार्यक्रम

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 1 अप्रैल 1951 से नियोजित आर्थिक विकास के माध्यम से ग्रामीण विकास कार्यक्रमों पर बल दिया जा रहा है। भारत में सामाजिक न्याय के साथ प्रगति हो। यह लगभग सभी योजनाओं का मूल उद्देश्य रहा है।

ग्रामीण विकास की कुछ महत्वपूर्ण योजनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है

1. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम–इस योजना की शुरुआत 2 फरवरी 2006 को 27 राज्यों के 200 चुने गये जिलों में किया गया। इन 200 जिलों में से 150 जिलों में पूर्व से ही काम के बदले अनाज योजना कार्यक्रम चल रहा था जिसे नरेगा में विलय कर दिया गया। दिसम्बर 2009 से इस योजना का नाम बदल कर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम कर दिया गया।
2. स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना–गरीबों को स्वरोजगार में सहायता करने, कौशल विकास, ऋण अनुदान देने के उद्देश्य से 1 अप्रैल 1999 में इस योजना की शुरुआत की गयी।
3. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना–25 दिसम्बर 2000 से केन्द्र प्रायोजित इस योजना की शुरुआत की गयी। इसके अर्न्तगत ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क विहीन गांवो में सड़क निर्माण कराना है।

Scanned by CamScanner

4. इन्दिरा आवास योजना–आवास जैसी बुनियादी आवश्यकता की पूर्ति के लिए वर्ष 1985–86 में इन्दिरा आवास योजना को एक उपयोजना के रुप में प्रारंभ की गयी। इस योजना का उद्देश्य अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा मुक्त बंधुआ मजदुरों को निःशुल्क आवास उपलब्ध कराना है।
5. समेकित बंजर भूमि विकास कार्यक्रम–बंजर भूमि के विकास से उत्पादकता में वृद्धि के साथ ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार में वृद्धि के लिए वर्ष 1989–90 से इस योजना की शुरुआत की गयी।
6. अन्नपूर्णा योजना–बीपीएल वर्ग की सहायता के लिए इस योजना की शुरुआत 1 अप्रैल 2000 को हुयी।
7. राष्ट्रीय परिवार लाभ योजना
8. ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं के प्रावधान की योजना
9. जवाहर रोजगार योजना–इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में बेराजगार और अपर्याप्त रोजगार प्राप्त पुरुषों व महिलाओं के लिए अतिरिक्त लाभप्रद रोजगार का सृजन करना है।
10. राष्ट्रीय विस्तार सेवा – इसके अर्न्तगत निम्नांकित कार्य किये जाते हैं–

i कर्मचारियों का प्रशिक्षण

ii प्रचार / प्रसार

iii कृषक शिक्षण

11. राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम

Scanned by CamScanner